e véros; hib. nua, nuadh; de lith. nauja-s; goth. niuji-s v. राज्य-)

নতান novem. (Lat. novem - proprie a নতাম nonus; goth. niun; lith. dewyni e newyni; slav. devjatj; gr. ἐννέα, prae-fixo ε, reduplicato ν; cambro-brit. naw; hib. naoi; v. gr. comp. 317.)

নবান f. nonaginta. (V. gr. comp. 320. annot.)

नवम (f. ਸੀ, a नवन् s. ਸ e तम) nonus. (V. gr. comp. 321.)

নবীন (a নব s. ईন) novus. Am.

নবাভা f. (e নব et ক্রভ in fem., a r. বাহু) nova nupta. Hir. 44.11.

নত্য (r. নু s. য়, ergo proprie laudandus, nisi a praep. সূনু s. য়, v. নতা) novus, recens, juvenis. Am. (Lith. nauja-s, goth. niuji-s.)

न्य 4. P. interdum A. (fut. part. निश्तास्मि et नष्टास्मि, fut. aux. नशिष्यामि et नङ्क्यामि, gerund. नशि-त्वा et नष्टा) perire, mori. Br. 1. s.: कृतं यस्मिन् न नश्यतिः MAH. 3.10701 :: पुत्री उनश्यत मुने:, 7014 :: म्रथभङ् कृतन् नश्यते तत्र स्नातमात्रस्यः — नष्ट perditus. N. 10. 29.: नष्टात्मन् ; 13. 10.: मार्गा नष्टा:; 22. 15.: ਜੁਣਰ੍ਹ: Caus. P. A. delere, extinguere. N.9.28.: मान्तस्य ते ... नाशियष्याम्य म्रहङ् ह्मामम्; Bu. 10. 11.: तेषाम् म्रज्ञानजन् तमः ... नाशयामिः, R. Schl. II. 62.15.: शोको नाशयते धैर्यम् Praet. mltf. म्रनीन-शम. Ман. З. 2027.: धर्म्यान् मा नीनश: पथ: (Сб. lat. NEC, nex; ratione habitâ, sanscritum ortum esse e k; necare et nocere conveniunt cum Caus. नाश्यामि, v. gr. comp. 109a). 6.; vinco trahi posset ad নতা praef. ত্রি, ejecta radicis vocali; sic vincio retulerim ad AE praef. বি; gr. νέκυς, νεκρός; fortasse νόσος, mutato κ in σ, fortasse vinaw = नाशयामि; attenuato d in 1; hib. nas «death»; goth. nau-s mortuus, gen. navi-s, Them. navi e nahoi, ejecto h, sicut nostrum wer = goth. hoa-s e has pro kas, adjecto v; v. gr. comp. 383.)

c. प्र प्रणाश्यामि (gr. 94^b).; ubi tamen finalem radicis litteram consonans muta vel sibilans sequitur, primitivum न servatur, unde part. pass. प्रनष्ट, fut. प्रनष्ट्रयामि vel प्रणाशिष्यामि, v. Pån.VIII. 4.36.; non raro autem in libris editis et manuscriptis contra hanc regulam invenitur ण pro ন, e. c. Su. 2.22.: प्रणष्टन्यतिदिज्ञा, sic etiam in edit. Calc. 1.7673.; N. 24.17.: मम राज्यम् प्रणष्टम्, in ed. Calc. प्रनष्टम्) i.q. simpl. Bh. 1.40.: प्रणाश्यन्ति कलाधर्माः

- c. प्र praef. सम् id. सम्प्रनष्ट qui evanuit. N.20.40.: स-म्प्रनष्टे कली (sic cum ed. Calc. legendum pro सम्प्र-पष्टि).
- c. वि id. Br. 2.20.21. 3.7.8. Br. 8.20.; MAH. 3.2361.: विनङ्क्यामि न संशयः Caus. necare, perdere. MAH. 1.4169.; मा नः सर्वान् ठ्यनीनशः. R. Schl. I. 55.27. RAGH. 2.56.
- 1. नम् 1. 4. (कारिल्ये к. ह्वृता r.) curvum, flexuosum esse.

2. तस् f. (nom. नास्) nasus, praesertim in fine compositorum. Dr. 6.22.: सुनस् (V. नासाः)

নত্ 4. P. A. নন্থানি, নন্থ (অন্থন ম. অন্থ দ. Formae, quae consonantem mutam vel sibilantem proxime cum radice conjungunt, derivantur a ন্যু, quae primitiva radicis forma esse videtur; unde e. c. praet. multf. স্নান্দেন, fut. aux. নন্থানি, part. pass. নত্ৰ) ligare, nectere, praesertim thorace se induere. MAH. 4. 1016.: योत्स्यमाना স্নন্থান্য — নত্ৰ conjunctus, indutus, praeditus. N. 12.6.: নানাখানুখনি, নত্ৰ: (Lat. nec-to, neo; fortasse vi-ncio = বিনন্থানি, ejectà radicis vocali, v. ন্যু; gr. νέω, νήθω; goth. nêhva prope; germ. vet. nah prope, post; nêhan, nêvan nere, sarcire; ga-nah sufficit, praet. sensu praes. (v. Graff. II. 1005.); nêg, anglo-sax. nêh satis, ge-nug; hib. nasgaim «I bind, tye, chain», nas «a band, tie», v. Pictet p. 67.)

с. ऋप exuere. Ман.ु. 13309.: ऋपनत्थे वासम्

с. म्रपि vel पि induere. Внатт. 3.47: काञ्चम् पिनह्यः Ман. 1.759: कुएडले ... तस्य चित्रयया पिनद्धेः Sak. 10.3. infr: पिनद्धेने 'तेन ञल्कलेन प्रियम्बद्या द-हिन् पीडिता 'सिमः 10.10: कुसुमम् इव पिनद्धम्